चुनाव का रुख

पकिस्तान साथ दे गया तो ठीक वरना मोदी को झोला उठा कर जाना ही पड़ेगा.....

अम्मा किसे वोट देगी इस बारी ?

देख भाई मोदी को तो देती ना मैं कोई। हुक्के की चिलम ठीक करते हुए 80 वर्षीय रामखीर ने कहा।

पर ये तेरे हुक्के पर तेरे साथ बैठी सारी औरतें तो मोदी को वोट कर रही हैं, यो कैसी दोस्ती है एक कहीं दे रहा है दूसरा कहीं; अम्मा ने कहा, देख छोरे हुक्के की दोस्ती है वोट की दोस्ती को ना।

सत्रहवीं लोकसभा के चुनाव का पहला चरण 11 अप्रैल को 91 सीटों पर मतदान के साथ प्रारंभ हो गया। इसी बीच पश्चिमी उत्तर प्रदेश की हापुड और गाजियाबाद सीट पर भी मतदान हुआ। मतदान के दिन किन मुद्दों की कसौटी पर किसी पार्टी को मतदाता मापते हैं इसपर आधारित मजदूर मोर्चा के लिए विवेक की ग्राउंड रिपोर्ट।

यूपीएससी परीक्षा की तैयारी कर रही बढाने गाँव (जिला हापुड़) की भावना सीवाल ने बताया कि इससे पहले वोट देने का ऐसा खुमार कभी उनपर नहीं चढ़ा था। आईएएस की तैयारी करने के दौरान भारतीय समाज और उसके लोकतांत्रिक ढाँचे की समझ बेहतर हुई है, इसलिए इस बार संविधान और देश बचाने के लिए मोदी की खिलाफ वोट किया है।

पर वहीं भावना का पूरा परिवार मानता है कि मोदी है तो ही देश सुरक्षित हाथों में है। मोदी ने पाकिस्तान पर हवाई हमला करके पाकिस्तान को डरा दिया जिस कारण अब आतंकवादी हमले कम हो गए। जब घर के मुखिया जो परधान जी के नाम से पूरे क्षेत्र में मशहूर हैं से पूछा गया कि आपको कैसे पता चला कि अब आतंकवादी हमले कम हो गए और पकिस्तान डर गया तो उखड़ते हुए बोले दिख नहीं रहा क्या कि जबसे एयर स्ट्राइक हुई है तबसे एक भी हमला सैनिकों पर नहीं हुआ। इस पर गाँव के ही एक युवक ने परधान जी को दैनिक जागरण अखबार न पढने की सलाह दे डाली।

उसी गाँव के 45 वर्षीय रामबीर चौधरी ने ये पूछने पर कि क्या मोदी ने अपनी पुराने वादे पूरे किये, कहा कि वादे तो देखो जी किसी पार्टी ने कभी पूरे नहीं किये। अब क्या सिर्फ इसलिए कि मोदी वादे पूरे नहीं कर सका तो हम पाकिस्तानी आतंकवादियों को घर में घुसा लें? अगर इस बार मोदी नहीं आया तो कन्हैया कुमार जैसे बेगुसराय से लड़ने वाले नेता देश को कांग्रेस के साथ मिल कर बेच डालेंगे। इसलिए रामबीर ने अपना वोट भाजपा को दिया है।

वोट देकर वापस लौटती 50 वर्षीय कुशला ने बताया कि उन्होंने भी अपना वोट भाजपा को दिया है। ये पूछने पर कि किस मुद्दे पर भाजपा को वोट दिया तो बोलीं कि मुद्दा वुद्दा हमे न मालूम भाई, उन्होंने (पति) जिसको देने को बोला दे दिया। हर बार से ऐसे ही दिया है वोट तो इस बार कौन सी नयी बात होती। हम तो परधानी के चुनाव में भी उनके कहने से ही वोट देते रहे हैं।

इसी प्रकार पहली बार अपना वोट देने गई 20 वर्षीय शिवानी ने बताया कि पापा ने कहा कि कमल का बटन दबाना है, इसलिए जैसा पापा ने कहा हम तीनो बहनों ने वही किया। कमला से हमने ये जानना चाहा कि क्या वो जानती हैं कि जिस प्रत्याशी को उन्होंने वोट दिया उसने क्या काम किये हैं या उसकी छवि कैसी है। इसपर चौकाने वाला जवाब मिला कि उन्हें तो प्रत्याशी का नाम तक नहीं पता।

जाट समुदाय से आने वाली निशिता ने बताया कि पिछली विधानसभा के चुनाव में पापा के कहने से उन्होंने भाजपा को वोट दिया था। ऐसा निकम्मा मुख्यमंत्री बैठा दिया सिर पर ला कर कि अब तो मरती मर जाउंगी पर भाजपा को वोट नहीं करुँगी। निशिता ने बताया कि उसके पिता ग्राम प्रधान थे और उसी समय अखिलेश की सरकार में 60 प्रतिशत से ज्यादा नंबर लाने पर पुरस्कार स्वरूप लैपटॉप मिले थे। हमारे जाट समाज के सभी लोगों ने अखिलेश को बेशक गालियाँ दीं थी पर उसी लैपटॉप से आज हम ज्यादातर काम करते हैं। अब योगी आ गया तो नशेड़ी और निकम्मे साधुओं को पैसे दे रहा है न कि हम विद्यार्थियों को कोई सुविधा देने के बारे में चर्चा ही की हो इसने कभी।

ग्राम प्रधान रतनचंद ने माना कि नोटबंदी और जीएसटी से काफी नुक्सान हुआ था पर अब गाड़ी पटरी पर आ गई है। और सिर्फ इस छोटे से नुकसान के लिए क्या देश को बांटने वालों को वोट दे दें। मोदी न हो तो ये मुल्ले कब्जा कर लेंगे सारे हापुड पर जैसे कि कीछोड़ जाने वाली सड़क पर कर लिया। प्रधान ने बताया कि कीछोड़ जाने वाली सड़क पर जब भी जाते हैं ऐसा लगता है कि पाकिस्तान में आ गए। जब प्रधान से पूछा गया कि क्या उन्होंने पाकिस्तान देखा है तो बोले नहीं, तब आपको कैसे पता चला जाता है कि आप पाकिस्तान आ गए जब आपने पाकिस्तान देखा ही नहीं है। प्रधान ने कहा कि पाकिस्तान में कोई अंगरेज रहते हैं? ये मुल्ले ही तो वहाँ भी हैं।

पहली बार वोट दे कर वापस आती शिखा ने अपनी साइकिल को खड़ा करते हुए बताया कि उनके परिवार ने उन्हें भाजपा को वोट देने के लिए कहा पर मैने गठबंधन से खड़े उम्मीदवार मोहम्मद अब्दुल नाड़ी को वोट दिया है। शिखा ने बताया कि उनके ऐसा करने के पीछे सिर्फ एक कारण ये है कि जिस साइकिल से आज वो वोट करने गयी हैं वो अखिलेश सरकार में उन्हें अच्छे नंबरों से पास होने पर मिली थी। जब दसवीं में थी तो छोटा भाई जो दूसरे स्कूल की आठवी कक्षा में पढता था वो स्कूल तक अपनी साइकिल पर छोड़ने जाता था बतौर चौकीदार, पर इस साइकिल ने शिखा को स्वतंत्रता का एक नया बोध कराया है।

मोटर साइकिल पर भाजपा का झंडा लगाए कच्ची सड़क पर धुल का गुबार उड़ाते कुछ नवयुवकों से बातचीत करने पर सबका एक स्वर में ये मानना था कि इस देश में रहने वाले मुस्लिम खाते तो यहाँ का हैं पर गीत गाते हैं पाकिस्तान का। मोदी ही इनको ठीक कर सकता है वरना कांग्रेस तो बस इनसे वोट लेती रही है। नवयुवकों की औसत आयु लगभग 20 से 22 वर्ष होगी। ये पूछने पर कि अपने देश के एक समुदाय को लेकर ऐसा सोचना क्या संविधान के खिलाफ नहीं प्रतीत होता तो नारा? होते हुए एक युवक ने कहा कि संविधान भी तो कांग्रेसी नेताओं ने लिखा है। वो कौन सा गाँव-गाँव आकर सबसे पूछ गए थे कि इन मुल्लों को यहाँ रहने दें या नहीं।

गाँव के बाहर बसी दलित बस्ती में जा कर पता किया तो सबने गठबंधन को वोट किया है। एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो कहे कि वो मोदी जी से प्रभावित हुआ है। पचास वर्षीय ओमप्रकश ने बताया कि मोदी के नाम का झंडा लिए जाट लड़के मोटरसाइकिलों पर चिल्लाते घूमते हैं और जब हमें वोट करने के लिए आते या जाते देख लेते हैं तो जोर से चिल्लाते हुए बोलते हैं कि कर आया सुवर को वोट? ओमप्रकाश के बेटे राहुल ने बताया कि हमने टोले के सभी नवयुवकों को शांति और धैर्य बनाये रखने की अपील की हुई थी कि यदि कोई उकसाए तो भी जवाब नहीं देना है। भाजपा समर्थक हमे भद्दी गालियाँ दे देते हैं आते जाते जबकि आजतक हमने कभी अपशब्द नहीं कहे उन्हें चाहे कितनी भी रैलियां की हों उन्होंने।

गन्ने की पेमेंट न मिलने से खफा 65 वर्षीय हुकुमदेव ने गालियों की बौछार करते हुए कहा कि हरामजादे ने आजतक गन्ने के पीसे न दिए। काहे का मोदी है यो। सारे मोदी वाले चोर निकल रहे तो यू भी ते मोदी ही है यो कैसे न चोर निकलता? यो तो कति डकैत जान पड़े। ससरे ने किसानी खराब कर धरी। हुकुमदेव का पोता निशांत भाजपा समर्थक बनियान पहने सामने आ गया और बोला बाबा पीसे-पीसे करता मर जागा, देश के बारे में भी सोच लिया करे कति। इसपर हुकुमदेव का जवाब काबिले गौर था, बोले, कुत्ते देस के बारे में सोचेया होता तो न तू पैदा होता न तेरा बाप। तु अपने बारे में सोच ले पहलां, नौकरी इसे मिले न और काम यो कर न सके बस यो मोबाइल ताई चिपका फिरे है जैसे मोबाइल ही रोट्टी देगा।

हुक्के पर हुकुमदेव के साथ बैठे उनके साथी टेकचंद ने कहा कि बेटा जमीन से जुड़ा किसान तो भाजपा को बिल्कुल वोट नहीं करेगा पर हां ये जो नए लड़के हैं उनके दिमाग में छाया हुआ है मोदी और यही बेरोजगार भी हैं।

खेतों में काम कर रही कुछ दलित महिलाओं ने हमे चुप रहने का इशारा करते हुए कहा कि अभी वो कुछ नहीं कह सकती क्योंकि जिस खेत में वो काम कर रही हैं वो जाटों का है और वो पीछे ही खड़े हैं। अगर उन्होंने सुन लिया तो काम से ही कहीं हाथ न धोना पड़ जाए।

किसानी से अपना और अपने परिवार का पेट पालने वाले चौधरी किशनपाल ने कहा कि मैं वोट नहीं देता अब। पिछली बार मोदी को दिया था और अब तक पछता रहा हूँ। मेरे सारे घर वाले मोदी को दे आये हैं पर मैने अब सोच लिया है कभी वोट नहीं दूंगा। आज ये मुसलमानों को मारने की बात कर रहे हैं। जिस दिन मुसलमान नहीं होंगे उसके बाद ये अपने हिन्दुओं को मारने की बात करेंगे। तो क्या हम गर्दनें नापते फिरेंगे उस दिन सबकी।

अपने पूरे दौरे में हमने पाया कि जिस धार्मिक ध्रुवीकरण को लेकर भाजपा आगे बड़ी है उसपर काफी हद तक उसे कामयाबी भी हासिल हुई है। जहां एक तरफ कृषि के मुद्दे पर जमीनी किसान भाजपा से नाराज है तो वहीं आर्थिक रूप से थोड़ा सशक्त परिवार जिसकी आमदनी का अलग स्रोत है वो मोदी के पक्ष में जाता मिल जाएगा। एक ही परिवार के अलग-अलग उम्र के व्यक्ति अलग विचार रखते हैं। युवाओं में जहाँ पाकिस्तान और राष्ट्रवाद ज्यादा प्रभावी मुद्दा है तो वहीं उम्रदराजों को रोजगार की फिक्र अधिक है।

जहाँ तक युवाओं का प्रश्न है तो ये जानना सुखद है कि लड़कियां अपने समकक्ष लड़कों से कुछ अधिक प्रगतिशील होकर अपना प्रतिनिधि चुन रही हैं जबकि ज्यादातर लड़कों पर सोशल मीडिया की अफवाहें हावी हैं।

पिछले चुनाव में 31 प्रतिशत वोट मिलने पर मोदी सरकार बन सकी थी जबकि विरोधी वोट बंटा हुआ था। इस बार चुनाव में जहाँ एक तरफ गठबंधन उमीदवार के होने से वोट का बंटना मुश्किल दिख रहा है वहीँ मोदी के पक्ष में जो वोट पिछली बार टूटे थे वो भी सरकार के कामकाज से नाराज होकर अपने पुराने खेमे में जाते नजर आ रहे हैं। यदि यही समीकरण पूरे देश में चल गया तो मोदी जी को झोला और चोला दोनों उठा कर जाना पड़ेगा।

कमजोर को ही खा सकता हूँ...ऐसा शेर हूँ मैं : चुनाव आयोग

ईवीएम् से चुनाव कराने और न कराने को लेकर पिछले कई सालों से बहस चल रही है और मुद्दा सुप्रीम कोर्ट तक घूम आया है। पर चुनाव आयोग ने आजतक इसपर कभी संतोषजनक जवाब नहीं दिया। जबकि जमीनी हकीकत ईवीएम् से भी अधिक् खतरनाक प्रतीत हो रही है।

भूदन हापुड लोकसभा की सीट पर संपन्न हुए चुनाव में अपनी चोट लगी पत्नी को वोट डलवाने ले गए। दलित वर्ग से आने वाले भूदन को कुछ दूरी पर ही रोक दिया गया और उसके आगे उनकी पत्नी लंगडाते हुए जैसे तैसे पहुंची। पर वहीं जाट परिवार से आने वाले कुछ लोगों को किसी ने नहीं रोका जबकि वो बाकायदा बूथ के भीतर तक अपनी पत्नी के साथ गए।

इसी प्रकार भावना ने बताया कि उसकी भाभी दीपा जो कि गाँव में नहीं रहती उनका वोट घर की ही एक नाबालिक लड़की सौम्या से बाकायदा उसके दादा ने पोलिंग बूथ के भीतर खड़े होकर कमल पर डलवाया। ऐसे होते हुए किसी भी पोलिंग बूथ अधिकारी ने किसी भी प्रकार का विरोध भी नहीं किया। परिवार में भी भावना की विरोधी आवाज को हंसी में टाल दिया गया। निशांत का वोट उसके छोटे भाई ने डाला और कुछ अन्य मामलों में कई जाट परिवार के मुखियाओं ने दो-दो बार वोट डाले।

भावना ने बताया कि जब उन्होंने ऐसा होते देखा तो वो समझ गई कि क्योंकि ये पोलिंग बूथ जाट बाहुल्य है तो इसपर किसी और पार्टी के पोलिंग एजेंट भी नहीं बैठे, इसीलिए ये धांधली हो रही है। जाट होने का लाभ उठाकर भावना ने भी अपनी माता और ताई का वोट भाजपा की जगह गठबंधन के उमीदवार पर डलवा दिया, वो भी पोलिंग एजेंट के कहने पर बाकायदा मशीन का बटन खुद दबा कर।

70 वर्षीय महिला बादामी देवी ने बताया कि मैं अपना वोट डालने खुद गई थी क्योंकि मैं जानती थी अगर न गई तो कोई और मेरा वोट डाल देगा। प्रधानी के चुनाव होते तो नहीं जाती पर ये तो वही वाले चुनाव थे न जिसमे मोदी आ गया था और तब मेरा वोट किसी और ने डाला था। इसलिए इस बार वो खुद गई थी कि कहीं वोट फिर से मोदी को न डाल दे कोई।

चुनाव आयोग ने मायावती और योगी पर चुनाव प्रचार न करने की रोक का नाटक करके अपनी जिम्मेवारी से छुटकारा पा लिया। इतना करने का जोखिम भी आयोग ने सुप्रीम कोर्ट से लताड़े जाने के बाद किया जबकि आयोग कोर्ट को बताता रहा कि आयोग के पास शक्ति ही नहीं है। चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है जिसपर देश में चुनाव निष्पक्ष रूप से कराने का दारोमदार है। ईवीएम् पर संदेह पैदा होने की सूरतेहाल ये जिम्मेवारी आयोग की थी कि देश में फैल रहे इस अविश्वास का निदान किया जाता। उल्टे पोलिंग स्टेशन पर होने वाली इन धांधलियों को रोकने में भी आयोग अक्षम है, वो भी राजधानी से महज चंद घंटे की दूरी पर। ऐसे में क्या सच में लोकतंत्र और उसकी संस्थाओं पर जनता का विश्वास बना रह सकेगा।

वंशवाद के विरोध में पैराशूटर वीरेन्द्र सिंह!

देवीलाल का एकं किस्सा बड़ा मशहूर है। एक पत्रकार नें उनसे परिवारवाद के सिलसिले में पूछा कि आप पर अपने बेटे को बढ़ावा देने का आरोप है। चौधरी ने तपाक से कहा, और क्या भजन लाल के छोरे को बढ़ाऊंगा।

खैर भजनलाल ने भी अपने छोरों को यथा सामर्थ्य बढ़ाया। अब उनका छोरा कुलदीप अपने छोरे भव्य को बढ़ाना चाह रहा। देवीलाल के बेटे के बेटे और उनके बेटे इसी तरह राजनीति में आए हैं। एकाध और रिश्तेदार भी। बंसीलाल के भी बेटे, बेटे की बहू, दामाद, पोती वगैराह सेवा के लिए स्थापित किए गए। भूपेंद्र हुड्डा के दादा ने उनके पिता को, पिता ने उन्हें और उन्होंने पुत्र को स्थापित किया।

अब बेचारे बीरेंद्र सिंह जो चौ. छोटूराम के दोहते होने के नाते रोहतक की नीली कोठी के मालिक भी हैं। हरियाणा का मुख्यमंत्री बनने की घोषित चाह रखने वाले बीरेंद्र अपने कज़न हुड्डा की कांग्रेस छोड़कर भाजपा में गए तो भी यह ख्वाब तो अधूरा रहा पर केंद्र में मंत्री हो गए। उनकी पत्नी प्रेमलता एमएलए हैं। उन्होंने हरियाणा के चौधरियों की परंपरा को ठुकराते हुए परिवारवाद से लड़ने का ऐलान किया है। अपना मंत्री पद, अपना राजनीतिक करियर खत्म करने का प्रस्ताव तक देकर। बस एक शर्त पर। एक शर्त पर कि भाजपा उनके बेटे को एमपी का टिकट देकर राजनीति में लॉन्च करे। परिवारवाद से लड़ाई में भाजपा ने बीरेंद्र सिंह का साथ दिया। उनके बेटे बृजेन्द्र को हिसार से एमपी का टिकट देकर।

-धीरेश सैनी

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06